P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-8* ISSUE-3* November- 2020
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

समूह गतिशीलता : का माध्यमिक स्तर के छात्रों पर प्रभाव – एक प्रयोगात्मक अध्ययन

Effectiveness of Group Dynamic on High School level Students

Paper Submission: 15/11/2020, Date of Acceptance: 26/11/2020, Date of Publication: 27/11/2020

जयेंद्र आर मेश्राम
सीनीयर रिचर्स फैलो,
शिक्षशास्त्र विभाग,
आर. टी. एम, यूनिवर्सिटी
नागपुर, महाराष्ट्र, भारत

सौ.राजश्री वैष्णव
प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष
शिक्षशास्त्र विभाग,
आर. टी. एम, यूनिवर्सिटी
नागपुर, महाराष्ट्र, भारत

सारांश

यह शोध पत्र एक प्रायोगीक शोध पर आधारित है। इस शोध अध्ययन हेतू न्यादर्श के रूप में महाराष्ट्र के नागपुर शहर के शहरी क्षेत्रों से 200/200 हिंदी, मराठी एवं अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों के कक्षा 9 वी में अध्ययनरत कुल 400 विद्यार्थीयों का चयन किया गया। जिसमें 200 छात्र एवं 200 छात्राएं थी। शोध का उद्देश शहरी क्षेत्र के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं पर समूह गतिशीलता पद्धति का प्रभाव उनके अध्ययन आदते, एवं समस्या समाधान अभियोग्यता पर ज्ञात करना था। शोध अध्ययन से यह ज्ञात हुआ कि नागपुर शहर के छात्र और छात्राओं पर समूह गतिशीलता पद्धति का प्रभाव उनके अध्ययन आदते, समस्या समाधान अभियोग्यता पर सार्थक प्रभाव पड़ता है। इतना ही नहीं छात्र और छात्राओं की उनकी लैंगिक भिन्नता पर भी सार्थक प्रभाव पडता है।

This paper is based on a practical research. A total of 400 students studying in class IX of 200/200 Hindi, Marathi and English medium schools were selected from urban areas of Nagpur city of Maharashtra as the judges for this research study. There were 200 students and 200 girls. The aim of the research was to find out the impact of group dynamics method on students and students studying in urban area schools on their study norms and problem solving feasibility. From the research study, it was found that the effect of group dynamics method on the students and students of Nagpur city has a significant effect on their study etc., problem solving aptitude. Not only this, there is a meaningful impact on the gender differences of students and girls.

मुख्य शब्द : समूह गतिशीलता, अध्ययन आदते, समस्या समाधान।
Group Dynamics, Study, Problem Solving.

प्रस्तावना

अध्ययन यह शिक्षण प्रक्रिया की बहुत ही जटिल और उलझी हुई प्रक्रिया है। अधिगम अच्छा होने के लिए केवल अध्यापक का दायित्व नहीं होता, तो अधिगम प्रक्रिया के कार्यपद्धति पे उसका यश छिपे होता है। अधिगम प्रक्रिया में, अध्यापन का समय बताने की योग्यता, अध्यापन का नियोजन, एकाग्रता, मनन, चिंतन और लिखने की पद्धति इ. बहोत–सी बातों का समावेश होता है। इसका तात्पर्य ऐसा की अधिगम प्रक्रिया यह अध्यापन पद्धति पर निर्भर होती है। शैक्षणिक उपलब्धि यह केवल बुद्धिमत्ता पे निर्भर न होते हुऐ अध्ययन आदतों पे निर्भर होती है। अधिगम यह अध्यापन के साथ–साथ अच्छी अध्यापन पद्धति के उपर भी निर्भर होता है। अध्ययन आदते ये स्वं-अधिगम में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। व्यक्ति भिन्नता के कारण छात्रो द्वारा उपयोग मे लाई जानेवाली विशिष्ठ अध्ययन पद्धति में बड़ी तफावत दिखाई देती है। व्यक्ति भिन्नता में अध्ययन के लिए निकाला हुआ समय, दो अधिगम के बीच का अंतर, ऐच्छिक या अनैच्छिक संगीत की पार्श्वभूमी, अधिगम के बाद आने वाले (समस्या–बाधाये), अधिगम तंत्रे, टेक्नीक इ. ने भिन्नता दिखाई देती है। बहोत सी आदते अधिगम के लिए साध्यकारी या हितकारी होती है। अच्छी अध्ययन आदतो कां विकास होना यह एक शैक्षणिक समस्या है। विद्यार्थी उपलब्धियों पे परिणाम करनेवाली बुद्धिमत्ता उनकी रूची, अभिरूची, कसोटी परीक्षा इ. कारको के साथ अध्ययन आदते यह भी एक कारक प्रमुख माना जाता है। प्रस्तुत शोध में समूह

गतिशीलता का विद्यार्थियों की अध्ययन आदतें एवं समस्या समाधान अभियोग्यता पर प्रभाव के संबंध का अध्ययन करने के लिए शोधकर्ता ने प्रयास किया है।

अध्ययन आदते को प्रभावित करनेवाले प्रमुख कारको का वर्णन निम्न प्रकार से है–

विद्यालयी वातावरण (School Environment)

विद्यालयी वातावरण विद्यार्थीयों के हर पहलूओं पे परिणाम करता है। शैक्षणिक उपलब्धी यह खास आयाम है, उसे भी प्रभावित करता है। अगर विद्यालय में अध्यापक–छात्र संबंध, छात्र–छात्र संबंध खास होते है। उचित शिक्षण विधीयो–पद्धति यों के द्वारा शिक्षण कार्य किया जाता है। एवं विद्यार्थीयों को आवश्यक सुविधाएँ – जैसे प्रयोगशाला, पुस्तकालय (Library) स्वच्छ एवं आनंददायक कक्षा, योग्य प्रशिक्षण प्राप्त अध्यापक आदि उपलब्ध कराये जाते है। तो निस्संदेह उस में शिक्षण कार्य के प्रति रूचि बढ़ती है। इसका फायदा बच्चों को अपनी शैक्षणिक उपलब्धी बढ़ाने में दिखाई देती है। वही जहाँ विद्यालय वातावरण की परिस्थितीयाँ विद्यार्थीयों के शिक्षण के अनुकूल नहीं होती। वहाँ बच्चे पिछड़े हुए, अध्ययन समस्याग्रस्त, Undiscipline वाले, उनमें अच्छी आदतें, संस्कार नहीं होते. परिणाम स्वरूप उनकी शैक्षणिक उपलब्धी निम्न दर्जा कि होती है। इसलिए अच्छा विद्यालयी वातावरण बच्चों के शैक्षणिक उपलब्धी पे अधिक मात्रा में परिणाम करता है।

परिवार वातावरण और कार्य योजना

अधिकतर माता–पिता अपने बच्चों से अधिक उपलब्धी एवं सफलता की आशा रखते हैं किंतु जब उनका बच्चा उनकी सोच और आकांक्षा के अनुरूप खरा नहीं उतरता, या उपलब्धी प्राप्त नहीं कर पाता है, तो उसे कभी–कभी परिवार के सदस्यों की अवहेलना का शिकार भी होना पड़ता है। ये जरूरी नहीं होता की, माता–पिता अधिक पढ़े–लिखे हो. उदा. तारे जमीन के फिल्म में दर्शाया हुआ पात्र जरूरी तो ये होता है कि अपने बच्चों को अच्छी आदतो के प्रति, संस्कार के प्रति, अध्ययन कार्य करने के प्रति उन्हें समझे संहारना दे, एक दोस्त की तरह समझाये, और कार्य करने की योजना पे अमल करने के लिए तयार करे। सफलता बंगला हो या झोपडी दोनों में समान दिखाई देती है। और ये बच्चो पे निर्भर करती है। अच्छी आर्थिक स्थिती बच्चों को पर्याप्त सुविधा मुहवयां करने का काम जरूर करती है। अच्छा परिवार बच्चों को अच्छी आदतों से परिचित करवाता है।

अनियमितता

जब विद्यार्थी विद्यालय में नियमित रूप से रहता है। तो उसे कक्षा में पढ़ाई गई हर एक विषय वस्तू की जानकारी नहीं रहती ऐसा हो नहीं सकता। नियमित रूप से विद्यालय जानेवाले विद्यार्थीयों की एकाग्रता, तत्लीनता, या मन लगा रहता है। यह अच्छी आदतो का परिणाम है। कभी–कभी आज का काम कल पर छोड़ने पर बच्चों में अच्छी आदतो की अपेक्षा करना बेकार होता है।

वाचन और लेखन (Reading and Note Taking)

Writing is a Recording of Speech अध्ययन–अध्यापन यह शिक्षण प्रक्रिया की बहोत ही जटिल और उलझी हुई प्रक्रिया है। अध्ययन (अधिगम) अच्छा होने के लिए केवल अध्यापक का ही दायित्व नहीं होता। अध्यापक अच्छा होना काफी नहीं है। विद्यार्थीयों में अच्छी वाचन, पठन, मनन और लेखन की आदत होनी चाहिए। इस कारण भाषा विकास करने के लिए Four Fold Skill आना जरूरी होता है। जिसमें Reading, Writing listening and Speaking में उद्देश प्राप्त करने के लिए पढ़ाया जाता है। ताकि बच्चा दुसरों के विचार, उद्देश, उपदेश समझ सके। लिख सके, बता सके, अध्यापक द्वारा पढ़ाया हुआ पाठयवस्तू वो फिर से दोहरा सके। इसका परीणाम अध्ययन आदतो में होता है। जो विद्यार्थीयों की एकाग्रता, अधिगम का अच्छा लक्षण माना जाता है।

विषयों का नियोजन (Planning of Subject)

Planning is a Key of Success आज के विद्यार्थीयों का जीवन तणावपूर्ण है। बचपन से लेकर इस कि शिक्षा अनंत होती है। शिक्षा मंदीर से ही उसकी स्पर्धा सुरू हो जाती है। परिक्षा के लिए भरपूर पाठ्यक्रम, स्वाध्याय, बहुत सारा गृहकार्य, कोचिंग इ. कारणों द्वारा उनपर मानसिक दबाव होता है। मानो तो बच्चों के जीवन का उद्‌देश सर्वांगीण विकास न हो के केवल परिक्षा पास करना हो। लेकिन सबको इस अवस्था से जाना होता हैं! जो बच्चे अपने विषयों के अनुसार पाठ्यक्रम का नियोजन करते है। वो अच्छे अंक हासिल करने में कामयाब होते है। सालभर में सात–आठ विषयों का नियोजन करके अमल करे तो उनकी शैक्षणिक उपलब्धी निश्चीत तौर पे औसत से ज्यादा होगी।

परीक्षा की तयारी (Preparation of Examination)

आज के प्रतिस्पर्धा के यूग में शिक्षा का स्वरूप बदल गया है। आज की शिक्षा का उद्‌देश छात्रों का सर्वांगीण विकास नहीं बल्कि परिक्षा के लिए तैयार करना है। एक परिक्षार्थी के तौर पे उसे परिक्षा का उचित नियोजन करना जरूरी है।

प्रत्येक विद्यार्थी अपनी योग्यता के अनुसार अपनी आकांक्षा का निर्माण करता हैं एवं उसे पूरा करने के लिए प्रयास करता रहता है। अपने प्रयासों से उसकी पूर्ती नहीं कर पाता है तो वह शैक्षिक चिंता का शिकार हो जाता है। परिणाम स्वरूप कम उपलब्धी पाता है। या फेल हो जाता है। लेकिन उचित समय पे परिक्षा का नियोजन करके उपलब्धी ज्यादा भी पा सकता है।

सामान्य आदते और दृष्टिकोण (General Habit and Attitudes)

प्रत्येक बच्चा अपनी अभिरूची, अभिवृत्ती क्षमता, व्यक्तित्व एवं संवेगात्मक रूप से एक दुसरे से भिन्न होते है। उसी प्रकार विद्यालयी वातावरण भी अपने क्रियाकलापों, अनुशासन, पाठ–पठन, भौतिक संसाधनो में परस्पर एक–दुसरे विद्यालय से भिन्न होता है। लेकिन भिन्नता तो विद्यार्थीयों में भी होती है। पढ़ाई करने की आदत यह एक खास बात होती है। जो सभी बच्चों में अलग होती है।

अध्ययन आदतों की परिभाषा करे तो ऐसा कहा जा सकता है कि दुसरा–तिसरा कुछ भी नहीं है। अधिगम प्रक्रिया होने के लिए अध्ययन कर्ता द्वारा किया हुआ 'अथक प्रयास' ही अध्ययन आदते हैं।

समस्या समाधान अभियोग्यता

विद्यार्थीयों की समस्या समाधान कार्यनिती और कार्यविश्लेषण यह कुछ सालो से विद्यार्थी विकास का पैमाना माना जा रहा है। एक प्रकार से विद्यार्थी विकास क्रम का वर्णन करता हैं! समस्या समाधान यह क्रमिक प्रक्रिया है। इसकी सुरूवात व्यक्ती स्वयं से होती है।

समस्या परिभाषीत करना

सच्ची समस्या परिभाषीत करना – समस्या पे काम करना – उद्देशों के साथ संबंध स्थापित करना – निष्कर्षो के पास पहुंचना – सई निष्कर्ष निकालना।

एक अच्छी सोच विचार करणे के लिए अपने क्रियाकलापों को दोहराने की आदत लगानी चाहिए। इससे हमे पता रहता है कि क्या करना है? और क्या नहीं करना? हमारे पूर्व अनुभवों द्वारा सिखने के लिए पुनदृष्टीक्षेप करना जरूरी समझा जाता है। (Gilmer V.H. 1970)

समस्या समाधान को एक कार्य चौकट या सरंचना मान सकते है। जो हमारी सृजनशिलता एवं सोच (विचार) को खास भूमिका निभाने का काम करती है। (Simon 1965) एक रिसर्च से यह बताया कि कम्प्युटर का उपयोग करके सृजनशिलता सिखी जा सकती है।

समस्या समाधान अभियोग्यता यह सृजनशीलता के साथ समानता रखती है। समस्या समाधान प्रक्रिया में प्रयत्न प्रमाद खोज होती है। इसमें तल्लीनता होती है। समस्या समाधान योग्यता यह एक प्रकार की विद्यार्थीयों की बुद्धीमत्ता की कसोटी होती है। वर्तमानकालीन भागदौड के जीवन में आदमी को बहोतसी समस्याओं का सामना करना पडता है। आदमी की उचित, सई–सोच और कारण मिमांसा द्वारा समस्या हल भी करता है। ये सब आदमी की बुद्धीमत्ता स्तर पे निर्भर करता है। उदा. एक औसत बुद्धीमत्ता वाला आदमी औसत स्तर की ही समस्या हल कर सकता है। और औसत के निचेवाला एक आदमी आसान सा प्रश्न हल नहीं कर सकता। लेकिन एक उच्च कोटी की बुद्धीमत्तावाला आदमी कठीण से कठीण और जटिल प्रश्न भी हलकर दे सकता है। जो तुलनात्मकता से बाकी दो आदमी से ज्यादा होता है। समस्या समाधान यह बहुदिशात्मक प्रयत्न करने की चिरंतन प्रक्रिया है।

इसके अतिरिक्त, विद्यार्थीयों में समूह गतिशीलता पर कुछ शोध अध्ययनों का विवरण दिया गया है।

Jessica Kornberg Wall (2013) Satisfaction and Success in Assigned Group Dynamic:

निष्कर्ष

1. प्रात्यक्षिक समूह में कार्य परिणामकारकता प्रभावित होती है। साथ ही साथ में आंतर वैयक्तिक कौशल्यों का भी विकास होता है।
2. प्रात्यक्षिक समूह में कार्यस्थल पर समूह गतिशीलता का कार्य और कार्य समाप्त करने के लिए तत्पर तयार होते है।
3. मूल्यवर्धित कौशल्यों को हस्तांतरित करने के लिए समूह कार्य की अपनी खास पहचान होती है।
4. समूह की एक समूह कार्य सहभागी विद्यार्थी और अनुसंधान कर्ता ऐसी दो बाजू जानी जाती है।
5. समूह कार्य में कार्यक्षमता वाले और ज्यादा क्षमतावाले ऐसे दो समूह पाए गये।
6. कार्य से समूह की खास पहचान बनती है।

Dagmara Galajda (Jan. 2012) Teachers Action Zone in Facilitating Group Dynamics:

निष्कर्ष

1. कक्षा–कक्ष व्यवस्थापन शिक्षण अभ्यास के कई पहलुओं में से एक है। शिक्षक के सफल शिक्षक के साथ व्यवहार करना चाहिए। जो छात्रों के प्रयासों को सामान्य लक्ष्यों की ओर केंद्रित कर सके और समूह के सदस्य को एक टिम के रूप में काम करने के लिए प्रोत्साहित कर सके। हालांकि, एक प्रभावी सूत्रधार और नेता बनने के लिए शिक्षक को समूह नेतृत्व कि विभीन्न शैलीयों के बारे में जानकारी होनी चाहिए क्योंकि शिक्षक के लिए नेतृत्व का प्रशिक्षण केवल विभीन्न ही नहीं है। भिन्न नेतृत्व शैलीयों की विशेषताएं भी है।
2. एक समूह सहमतीवाले शिक्षक की सुविधा समूहों के स्वयं के संसाधनो पर निर्भर करती है।
3. जो प्रभावी नेतृत्व के बारे में अधिक जागरूक है। शिक्षक एक समूह में नेतृत्व कर सकता है। और अधिक प्रभावी तरीके से नेतृत्व कर सकता है।

Bianca-Oana Han (2010) Evolation of Group-Dynamics in the Classroom in the Light of Communicative Language Teaching

निष्कर्ष

1. यह निबंध यह प्रदर्शित करने की कोशिश कर रहा है कि विकास ने कक्षा संगठन और कक्षा की गतिविधीयों के क्षेत्र को भी छुआ है। जब से शिक्षण और सीखने के लिए विवादास्पद संप्रेषण दृष्टीकोण (उपागम) ने क्षेत्र में वृद्धी की है।
2. शिक्षण उपागम के साथ–साथ समूह गतिशीलता की भी विशेषता प्रस्तुत करते है।

Yasumo Matsumoto (2008) The Impact of Group Dynamic on the L_2 Speech of Student Nurses In the Classroom

निष्कर्ष

1. यह शोध यह बताने की कोशिश करता है कि समूह गतिशीलता के द्वारा अध्यापन करने पर बच्चों में नकारात्मक भाव कम हुआ। और बच्चे नए संवाद के लिए अपने आप तयार हो रहे थे। नकारात्मक भाव को हस्तांतरित करने के लिए उचित कार्यनिती का उपयोग करने लगे। अंग्रेजी बोलने के लिए खुद को प्रोत्साहित कर रहे थे। अपने कक्षा अंतर्गत अंग्रेजी बोलने के लिए अवसर खोज रहे थे। अंग्रेजी संवाद करने के लिए अपने सहभागी सदस्य का आत्मविश्वास और मजबूत करते थे।
2. उनकी अपनी चिंता, लज्जास्पदा, हिनभावना, समूह असमजंस्यता का उने भय नहीं होता था। समूह गतिशील विद्यार्थी, भिन्न मूल्य, विचार, अभिप्राय और भावना का सहजता से स्विकार करते है। व्यक्ति अंतर्गत, आंतरव्यक्ती सकारात्मक सोच को बढावा देते है।

Bobble J. Greenlee (2010)

समूह गतिशीलता शैक्षिक प्रतिसाद और शैक्षणिक कार्यक्रम में नेतृत्व के तौर पर मदत करता है। समूह

गतिशीलता समूह में सभासदत्व, संप्रेषण, सहकार्य, परिणाम स्थैर्य में बाकी समूह से उच्चस्तरीय बताया है।

Stephanie-K-Lee (2008) Investigation of team Dynamics and Group Performance In the Product Engineering Process

निष्कर्ष

1. एक इंजीनियरिंग टीम प्रोजेक्ट के सांस्कृतिक लक्षण इसके सदस्यों के प्रदर्शन और उत्पाद की गुणवत्ता को दृढता से प्रभावित कर सकते है। 2000 उत्पाद अभियांत्रिकी प्रक्रिया वर्ग समूह की गतिशीलता और प्रदर्शन के बीच संबंधो की जांच के लिए एक समूह प्रदान करता है। क्योंकि छात्र समूह कार्य करते है और ग्राहको और सलाहकार के मस्तिष्क प्रतिसाद, डिझाइनिंग, परिक्षण एक शेमेस्टर के दौरान पूरी तरह, कार्यात्मक यांत्रिक प्रोटो प्रकार का निर्माण करते है। जानकारी का उपयोग करते हुए है। प्रतिसाद को समय के समारोह के रूप में मापा गया था। क्लास डिंकीग स्टिस्टम से, जब प्रत्येक टीम सांस्कृतिक लक्षणो को दो सर्वेक्षणो का उपयोग करके मापा गया था। जो सभी छात्रों को पूरा करने के लिए आवश्यक थे।
2. इस अध्ययन के परिणामों से पता चला कि समूह के प्रदर्शन पर सबसे प्रभावशाली लक्षण कार्य समझ, संगठन और रचनात्मकता थे।
3. सर्वेक्षण के आंकडो के विश्लेषण से पता चला कि प्रत्याभरण और व्यावसायिक संचार में वृद्धी हुई। जबकि लचीलेपन में कमी आई है क्योंकि छात्र समूह अपने प्रारंभिक चरणो से पूरी तरह से परिभाषित टीमों मे परिपक्व हो गए है।

Yasuyo Matsumoto (Oct. 2008) The Impact of Group Dynamic on the L_2 Speech of Student Nurses In the Classroom

निष्कर्ष

1. वो हाईस्कूल में कैसे पढाए जाने में मेरे छात्र को शिक्षक केंद्रित उपागम के साथ व्याकरण – अनुवाद पद्धति से याकूदोकू अंग्रेजी पढ़ाया जाता था। जिससे लगता कि अध्यापक की बोलने की क्षमता नहीं है। जो शिक्षक और छात्र के बीच होने वाली अपरिवर्तनीय बातचीत का मालिक है। छात्र और छात्रा, छात्र और संपूर्ण कक्षा, और ज्यादा अंग्रेजी शिक्षक हाईस्कूल में अंग्रेजी शिक्षक की तुलना में उजागर करते है। निजी हाईस्कूल में याकुदोकू का उपयोग किया जाता है। छात्र की बोलने की क्षमता इस शिक्षण पद्धति के सुधार में बाधा उत्पन्न करती है।
2. दुसरा भाग – या छात्र को मुख्य रूप से अंग्रेजी बोलने में समस्या थी। शिक्षण विधियों के भारी नियंत्रण ने उन्हें चूप और निष्क्रीय कर दिया था। जब छात्र अपने समूहो से बात करने की कोशिश करते है, तो उन्हें शर्म, घबराहट और हीनता महसूस होती है। और इसे रिकॉर्ड किया गया। साथी के साथ नए संवाद की रचना करने के बारे में कुछ नकारात्मक प्रतिक्रियाए थी। लेकिन कुछ सकारात्मक प्रतिक्रियाए भी कुछ नकारात्मक प्रतिक्रियाओं को उपयुक्त रणनिती के साथ नियंत्रीत किया जा सकता है।
3. तिसरा – इन छात्रों पर समूह गतिशीलता का प्रभाव हुआ की उन्होंने सुधार करने की कोशिश को उनकी अंग्रेजी बोलने की क्षमता इस विश्वास को प्रोत्साहित करती है। कि नर्सिंग छात्र के पास अंग्रेजी बोलने का कक्षा में अधिक अवसर है। वे भाषाओं में अपने समूहों को संबोधित करने के बारे में अधिक आत्मविश्वास प्राप्त करेंगे, भले ही वो समूहो में भय कि चिंता, हीनता, शर्म और संघर्ष से गुजरे है। समूह के विभिन्न चरणों के माध्यम से सकारात्मकता को संभालने के लिए बदल जाते है।

Dominic Abrams, Lindsay Cameron (Dec. 2003) Development of Subjective Group Dynamic: Children Judgement of Normative and Deviant in Group and Out Group Individuals

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध यह बताता हे कि –

1. सभी उम्र के समूह में पूर्वग्रह का महत्त्वपूर्ण सबूत दिखाया गया है। जहा केवल बड़े बच्चों मे अंतर समूह और वैयक्तिक दोनो में पूर्वग्रह दिखाया है।
2. जब बच्चे कई श्रेणियों और व्यक्तिगत जानकारी के लिए उपस्थित होना शुरू करते है। तो वे व्यक्तिगत समूह की प्रक्रियाओं का मुकाबल करने के प्रमाण भी दिखाते है। और समूह अंतर्गत तुलना में हमने पाया कि बच्चों के व्यक्तिगत लक्ष्यों का मूल्यांकन सिर्फ उस बात से प्रभावित था जो वहां गया था। लक्ष्य व्यक्ति की समूह सदस्यता, जब बच्चे किसी अन्य व्यक्ति के बारे में विस्तृत जानकारी के लिए नजदिकी वाले ध्यान देते है। तो वे एक व्यक्ति समूह के अपने ज्ञान के साथ ऐसी जानकारी को इकठ्ठा करते है।
3. हमने पाया कि जब बच्चे भक्तिपूर्ण व्यवहार के निहितार्थ को समझते है। समूह के भीतर और भी मजबूत पहचान का प्रदर्शन करते है। खास तौर पे Subjective Group Dynamic सबसे स्पष्ट रूप से उभरता है।
4. जिस तरह से बच्चों के लिए इस शोध के दिलचस्प निहितार्थ है कि संभावित विचलित व्यवहारों की एक श्रृंखला को समझे और उसका जवाब दे, विद्यालय को भवन, भौतिक मतभेदो, समूहमित्रों के सभी प्रकार के चयन और रवैये की अभिव्यक्ति के परिणाम के रूप मे, विचलन के रूप में देखा जा सकता है। जो आंदोलन के विचार से दूर या उससे दूर होता है।

T. Ramayach, M. Jantam, A. Mond And K.H. Ling (2003) Internal Group Dynamic, Team Characteristic and Team Effectiveness: A Preliminary Study of Virtual Teams

निष्कर्ष

1. टिम की विशेषताओं का आंतरिक समूह की गतिशीलता और टीम प्रभावशीलता पर महत्त्वपूर्ण प्रभाव नहीं होता। हालांकि आंतरिक समूह की गतिशीलता बनाऐ टीम प्रभावशीलता के लिए हर्तर्डा के लिए प्रतिगमन मॉडल महत्त्वपूर्ण हैं
2. केवल टीम के सदस्य संबंध सकारात्मक रूप से टीम के प्रदर्शन से संबंधीत हैं जबकि केवल टीम सदस्य

संबंध, और टीम नेतृत्व सकारात्मक रूप से सहसंबंधित है।

3. टीम कार्यात्मक विविधता, टीम का आकार दोनों आंतरिक समूह की गतिशीलता को प्रभावित नहीं करते है।
4. आंतरीक समूह की गतिशीलता टीम की प्रभावशीलता को प्रभावीत करती है। मजबूत टीम नेतृत्व टीम के सदस्यों की संतुष्टि को बढाएगा।
5. आमने–सामने संचार और सामाजिक संचार टीम पर प्रभाव नहीं डालते है।

Mary Steven Wekh – B.S. (August 1994) A study of Group Dynamic

निष्कर्ष

1. समूह गतिशीलता के इस अध्ययन से प्राप्त मूल परिणामों पर निम्नलिखीत निष्कर्ष बताए गए है।
2. एक समूह कई व्यक्तियों का गठन करता है जो बहुसंख्यको द्वारा मूल्यवान के रूप में परिभाषित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए स्वेच्छा से सहयोग करते है।
3. सबसे प्रभावी समूह, कार्य को पूरा करनेवाले लागों के संख्या के अनुसार बदलता रहता है।
4. समूह की विचारप्रक्रिया (सोच) एक समस्या या सामान्य ध्येय या चिंताओं के बयान की परिभाषा के आसपास आयोजित की जाती है। रस के अनुसार स्थिती या आकस्मिक नेतृत्व के मार्गदर्शन की सुविधा होती है।
5. समूह की गतिशीलता के मूल सिद्धांत, विचारों के अन्य मुक्त आदान–प्रदान के अधिकार, और राय, सदस्याओं को हल करने की वैज्ञानिक विधी, एक–दुसरे को समझने के लिए वांछित संचालन, आम सहमती और प्रात्यक्षिक प्रक्रियाओं के रूप में अनुभाग है।
6. समूह चर्चा साधारण राय के साथ समाप्त होती है। समस्या स्थिर है। परिभाषीत की गई है। इसी से परिकल्पना पर्याप्त रूप से उत्पन्न हुई है।
7. समूह के काम का मूल्यांकन समूह और नियूक्त पर्यवेक्षकों और रिकॉर्डर द्वारा किया जाता है। जिन्हें शुरूवात से चूना जाता है।
8. एक नेता का कार्य चर्चासूची को खोलना है और समस्याओं को परिभाषित करते हुए चर्चा को प्रत्येक व्यक्ती को बाहर निकालना हैं और रेकॉर्डर की मद्द से सुशोभित करना।
9. कार्य करने की दृष्टि से समूह द्वारा नेता का चयन किया जाता है।
10. नेतृत्व को पारित किया जाना चाहिए क्योंकि समस्याओं को विकसीत या बदला जा सकता है।

कुक और प्ले (1978) व्यक्ती को अपने वर्तन एवं दृष्टिकोन से प्रभावित किया जा सकता है।

फिड्लेर (1971) अनुसंधान सुझाव देता है कि व्यक्ती, व्यक्ती के साथ और विश्वसनीयता के उपर प्रभाव डालता है।

झिम्बलो और पिलनर (1971) व्यक्ती दृष्टिकोन, व्यक्ति के खुद के वर्तन पे परिणाम करता है और परिणाम, दृष्टिकोन पे। व्यक्ती के उपर क्या व्यक्तीगत परिणाम होता है। इस कि महत्त्वपूर्ण भूमिका गतिशीलता निभाता है। पहले समूह समंजस्य और बाद में समूह सुविधाओं को प्रभावित किया जा सकता है। शोध कर्ता द्वारा और भी समूह गतिशीलता से सम्बन्धित भूतपूर्व अनुसंधानों को पडताला है। समझा और यह सार निकाला की विद्यार्थी एक मानसिकता का पूंज होता है। अनगिनत मानसिक योग्यता पे उसके परिणाम हो सकते है। उपरोक्त विवेचन एवं शोधो के आधार पर हम कह सकते है कि समूह गतिशीलता का परिणाम उनके शैक्षीक प्रगती पर हो सकता है। तव्दत अध्ययन आदते, समस्या समाधान अभियोग्यता और निर्णय क्षमता पर क्या होता है। होगा भी तो कहा तक सहायक हो सकता है। इसका मार्गदर्शन उन्हें प्रगती कि ओर बढ़ने एवं उपलब्धी प्राप्त करने में प्रेरणा के रूप में सहायक होता है।

मिल्नाय (1965) द्वारा किया गया शोध यह बताता है कि, तत्काल व्यक्तियों को व्यक्तियों के तरह प्रभावित किया जा सकता है। भावनात्मक रूप से दूर महसूस करना, आज्ञा का पालन न करना। या बड़े समूह का हिस्सा बनना, इस से प्रभावित किया जा सकता है।

बेल्स (1958) द्वारा नेतृत्व पर आधारित अनुसंधान के अनुसार व्यक्तियों का परिणाम, नेतृत्व करनेवाले नेताओं के परिस्थिती को प्रभावित कर सकता है। समझों एक व्यक्ती को क्या करना हैं? ये पता नही तो वो एक नेता कि तरफ देखेगा।

एक व्यक्ती, कार्य पूरा करने के लिए उन्मुख नेता द्वारा अधिक प्रभावित होने कि संभावना होती है।

आवश्यकता

"Destiny of India Shaped in Indian School Classroom'

अर्थात भारत का भविष्य भारतीय स्कुलो के चार दिवाली में हो रहा है। यह वाक्य कोठारी शिक्षा कमिशन का है। अर्थात भारतीय स्कूलो में होनेवाली शिक्षा प्रक्रिया के उपर शिक्षा शास्त्री को भरोसा है। अधिगम–अध्यापन, शिक्षा प्रक्रिया में होनेवाली महत्वपूर्ण बात है।

आचार्य विनोबाजी कहते है

''शिक्षा में कोई भी बाते नये से लाई नहीं जाती एवं नहीं अस्तित्व में लाई जाती किंतू सूप्त, चैतन्य, अंतरविहीत शक्ती को जागृत करने का एक साधन याने शिक्षा है।''

विद्यार्थीयों का सर्वांगीण विकास होने के लिए महत्त्वपूर्ण शिक्षा प्रक्रिये के कारक को जानना अती आवश्यक है। वो है, अध्ययन कर्ता याने विद्यार्थी दुसरा शिक्षा, अध्यापन और अभ्यासक्रम शिक्षा प्रक्रिया का अती महत्त्वपूर्ण घटक विद्यार्थी है। जो संपूर्ण शिक्षा प्रणाली का केन्द्र है।

अॅडम विद्यार्थी केन्द्रीत पद्धति का महत्त्व बताते समय कहते है।

''Teacher's teaches, Latin to John, John is more important than Latin.''

शिक्षा से व्यक्तिमत्व का विकास होना जरूरी है। शिक्षा में विद्यार्थीयों को खूद की रूची से, खुदकी योग्यता से क्षमता से, दृष्टिकोन से विद्यार्थी शिक्षा लेने देने की

अनुमती होनी चाहिए। अभ्यासक्रम उनके अनुसार होना चाहिए अध्यापन अधिगम की बहोत सी पद्धति यां विद्यार्थी केन्द्रीत है और उनको एक मनोविज्ञान का आधार है। मनोविज्ञान के आधार से कौन सी अधिगम पद्धति का चूनाव करना चाहिए इसका अध्यापक को ज्ञान होना जरूरी समझा जाता, अध्यापक के पास आधुनिक अध्यापक – अधिगम पद्धति का ज्ञान होना चाहिए, उनके पास निदानात्मक, उपचारात्मक दृष्टिकोन भी होना जरूरी समझा जाता इस संपूर्ण गुणों से परिपूर्ण अध्यापन ही विद्यार्थीयों में अपेक्षीत परिवर्तन लाया जा सकता है। और ये परिवर्तन के ज्ञानात्मक विकास से विद्यार्थीयों में लाया जा सकता है।

ज्ञानात्मक विकास में विद्यार्थीयों को भिन्न विषयों का ज्ञान होना, विचार करने की क्षमता का विकास होना, विचार करने कि क्षमता निर्माण होना, यह संपूर्ण वर्तन प्राप्ती विद्यार्थीयों में ज्ञानात्मक विकास होने से दिखेगी ज्ञानात्मक विकास के साथ विद्यार्थीयों का भावात्मक तथा क्रियात्मक विकास भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है। विद्यार्थीयों का आन्तरिक लक्षणों का विकास शिक्षा का लक्ष्य और कार्य है। इसमें विज्ञान के साथ–साथ मानविकी, समाजविज्ञान कला, साहित्य का अध्ययन भी आवश्यक है। इस के साथ भाषा, विज्ञान और गणित भी जरूरी है। शिक्षार्थी के सर्वांग विकास के लिए सभी विषयों का ज्ञान और प्रयोग आवश्यक है। रूसो के समान T.P. Num भी यह मानते है की मनुष्य जन्म के साथ स्वतंत्र हो, उसे स्वाभाविक विकास की स्वतंत्रता मिलनी चाहिए वा सात्वीक स्वतंत्रता परिवेश के समन्वय में है। आन्तरिक प्रवृत्तियों कि अभिव्यक्ती की स्वतंत्रता जरूरी है।

John Henrich का कहना था कि शिक्षा अध्यापन कि सफलता बालक की रूचि के अनुसार सिखाने पर आधारित है। प्राचीन काल से आज तक यह पाठयक्रम निर्माण और अध्यापन प्रणालीयों का एक मानवीक सिद्धांत रहा है कि मानव विकास की विभिन्न अवस्थाओं में इन में परिवर्तन होते रहना चाहिए।

मनुष्य अपने विकास में शैशव, बाल्यकाल, किशोरावस्था, वयस्क और वृद्ध आयू से निकलता हैं इन सब अवस्थाओं में उसकी शारीरिक और मानसिक, शक्तीयॉ निरन्तर बदलती रहती है। अस्तु, पाठयक्रम और अध्यापन प्रणाली मानव विकास की अवस्था को अनुरूप होनी चाहिए। जब की इस से रूचि बनी रहती है। इसी से शिक्षा सफल होती है। पाठयक्रम निर्माण और अध्यापन प्रणालीयों में मानव विकास की विभिन्न अवस्थाओं में परिवेश की नयी व्याख्या जानी चाहिए।

शिक्षक को सदैव अपनी अध्यापन प्रणाली को शिक्षार्थीयों के व्यक्तीत्व और विकास के अनुरूप रूचिकर बनाना चाहिए।

''शिक्षा का सामूहिक जीवन पर तथा सामूहिक जीवन का शिक्षा पर क्या प्रभाव पड़ता हैं यही नहीं, उसने यह भी स्पष्ट किया है कि व्यक्ती को पूर्णरूपेण विकसीत करने के लिए उस पर पड़नेवाला सामाजिक शक्तीयों के प्रभाव का अध्ययन परम आवश्यक है।''

जार्जपेन (The principle of education sociology) जॉन डीवी (John Dewey) अपनी प्रसिद्ध पुस्तक (School, Society and Democracy Education) में शैक्षणिक समाजशास्त्र के महत्त्व को स्वीकार करते हुये शिक्षा को सामाजिक प्रक्रिया माना है। तथा बताया है कि शिक्षा प्रक्रिया व्यक्ती द्वारा जाती कि सामाजिक चेतना में भाग लेने से ही विकसीत होती है। इसी अपेक्षा हेतू अध्यापन अधिगम में समूह गतिशीलता का विद्यार्थीयों कि समस्या समाधान अभियोग्यता और अध्ययन आदतों पे क्या प्रभाव होता है यह जाँचने के लिए अनुसंधान करने का प्रयास किया है।

अनुसंधान विधान

समूह गतिशीलता का माध्यमिक स्तर के छात्रो पर प्रभाव – एक प्रायोगिक अभ्यास

संशोधन के उद्देश

1. कक्षा 9 वी स्तर के छात्र / छात्राओं को समाज विज्ञान विषय अध्यापन हेतू समूह गतिशीलता पद्धति की समस्या समाधान अभियोग्यता पर प्रभाविता का अध्ययन करना।
2. कक्षा 9 वी स्तर के छात्र और छात्रों को समाज विज्ञान विषय अध्यापन हेतू समूह गतिशीलता पद्धति की समस्या समाधान अभियोग्यता पर प्रभाविता का अध्ययन करना।
3. कक्षा 9 वी स्तर के छात्रा और छात्राओं को समाज विज्ञान विषय अध्यापन हेतू समूह गतिशीलता पद्धति की समस्या समाधान अभियोग्यता पर प्रभाविता का अध्ययन करना।
4. कक्षा 9 वी स्तर के छात्र / छात्राओं को समाज विज्ञान विषय अध्यापन हेतू समूह गतिशीलता पद्धति की आध्यापन आदतो के उपर प्रभाविता का अध्ययन करना।
5. कक्षा 9 वी स्तर के छात्रो और छात्रों को समाज विज्ञान विषय अध्यापन हेतू समूह गतिशीलता पद्धति की अध्यापन आदतों के उपर प्रभाविता का अध्ययन करना।
6. कक्षा 9 वी स्तर के छात्रो और छात्राओं को समाज विज्ञान विषय अध्यापन हेतू समूह गतिशीलता पद्धति की अध्यापन आदतों के उपर प्रभाविता का अध्ययन करना।

परिकल्पना

1. कक्षा 9 वी स्तर के छात्र और छात्राओं को समाज विज्ञान विषय अध्यापन हेतू समूह गतिशीलता पद्धति का अध्ययन आदतों के उपर कुछ भी सार्थक प्रभाव नहीं होगा।
2. कक्षा 9 वी स्तर के छात्र और छात्रों को समाज विज्ञान विषय अध्यापन हेतू समूह गतिशीलता पद्धति का अध्ययन आदतो के उपर कुछ भी सार्थक प्रभाव नहीं होगा।
3. कक्षा 9 वी स्तर के छात्रा और छात्राओं को समाज विज्ञान विषय अध्यापन हेतू समूह गतिशीलता पद्धति का अध्ययन आदतों के उपर कुछ भी सार्थक प्रभाव नहीं होगा।
4. कक्षा 9 वी स्तर के छात्र और छात्राओं को समाज विज्ञान विषय अध्यापन हेतू समूह गतिशीलता पद्धति

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-8* ISSUE-3* November- 2020
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

का समस्या समाधान अभियोग्यता पर कुछ भी सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

5. कक्षा 9 वी स्तर के छात्र और छात्रों को समाज विज्ञान विषय अध्यापन हेतू समूह गतिशीलता पद्धति की समस्या समाधान अभियोग्यता पर कुछ भी सार्थक प्रभाव नहीं होगा।
6. कक्षा 9 वी स्तर के छात्रा और छात्राओं को समाज विज्ञान विषय अध्यापन हेतू समूह गतिशीलता पद्धति का समस्या समाधान अभियोग्यता पर कुछ भी सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

शोध सीमा

इस शोध अध्ययन की सीमा निम्नलिखीत थी

1. यह शोध केवल महाराष्ट्र के नागपुर, जिले तक ही सीमित था। शोध अध्ययन हेतु मराठी, हिन्दी, माध्यम के शहरी क्षेत्र के दो विद्यालयों का चयन किया गया था।
2. शोध अध्ययन के लिए सह–शिक्षण विद्यालयों का ही चयन किया गया था। जिसका कारण यह था कि बालक एवं बालिकाओं का शैक्षिक परिवेश समान हो।
3. प्रस्तुत शोध समूह गतिशीलता पद्धति का अधिगम तक ही सिमीत था।
4. प्रस्तुत शोध का उद्देश समूह गतीशीलता पद्धति का छात्र और छात्राओं की अध्ययन आदते, एवं समस्या समाधान अभियोग्यता पर प्रभाव जानने तक ही सिमीत था।

शोध विधी

शोधकर्ता ने आवश्यक सूचनाएँ एवं जानकारी प्राप्त करने हेतु प्रायोगीक शोध विधी का प्रयोग किया था। शोधकर्ता ने इस विधी के माध्यम से महाराष्ट्र के नागपुर शहर के विशेष संदर्भ में समूह गतिशीलता पद्धति का छात्राओं के अध्ययन आदते और समस्या समाधान अभियोग्यता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया।

न्यादर्श

नागपुर शहर के माध्यमिक स्तर से कक्षा 9 वी से इंग्रजी, मराठी, हिंदी माध्यम से 200/200 छात्र एवं छात्राएं सुलभ यादृच्छिक नमूना निवड पद्धति से चूने गये थे।

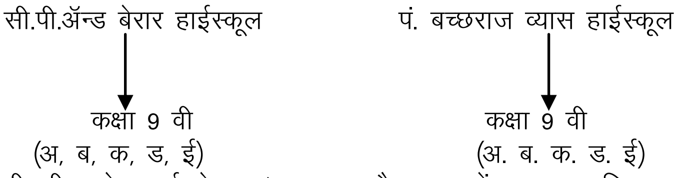

कक्षा 9 वी की प्रत्येक वर्ग से 20/20 छात्र और छात्राओं का चयन किया गया था।

प्रारूप : पूर्व उत्तर चाचणी (परिक्षण) समान दो गट प्रारूप का उपयोग किया गया।

प्रायोगीक अभिकल्प

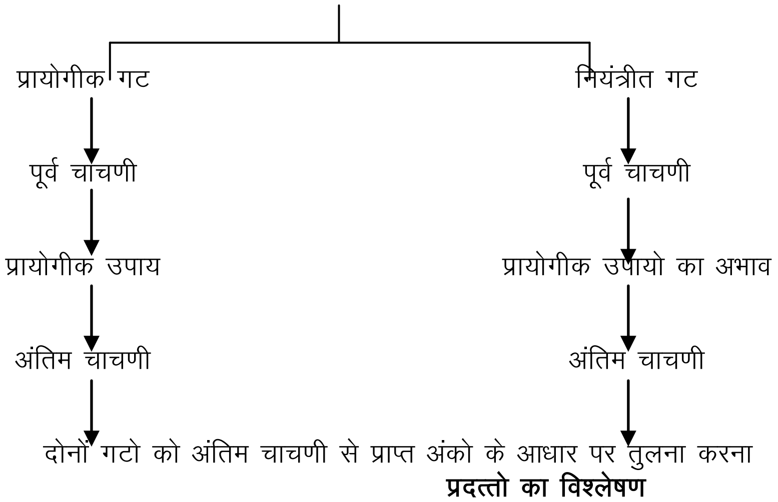

उपकरण का चयन

इस शोध अध्ययन में प्रदत्त संकलन हेतू रूपरेखा गर्ग द्वारा प्रमाणीत समस्या समाधान अभियोग्यता चाचणी का उपयोग किया गया। मापनी की विश्वसनीयता परीक्षण – पुनर्परीक्षण विधी से प्राप्त कि गई साथ ही में डा सनसन्वाल द्वारा निर्मित अध्ययन आदतें शोधिका का उपयोग किया गया। Pre-test, Post-test का उपयोग किया गया।

प्रदत्तो का विश्लेषण

शोधकर्ता द्वारा प्राप्ताकों का विश्लेषण मध्यमान, मानक विचलन, क्रांतिक अनुपात द्वारा विश्लेषण किया गया तालिका 1 और 2 में दिया गया है।

अध्ययन आदते संबंधी परिणाम तालिका 1 से यह स्पष्ट होता है कि समूह गतिशीलता पद्धति का परिणाम उनके अध्ययन आदतो के ऊपर होता है।

इसी प्रकार से विद्यार्थी–विद्यार्थी, विद्यार्थीनी–विद्यार्थीनीओं पे सार्थक अंतर प्राप्त हुआ है।

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-8* ISSUE-3* November- 2020
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

तालिका क्र. 1

अध्ययन आदतो के बारे में तुलनात्मक अध्ययन

अ.क्र.	विवरण	विद्यार्थी / विद्यार्थीनी	गट	चर	प्रमाण विचलन	मध्यमान	भौतिक अनुपात
1	विद्यार्थी	200	प्रायोगीक	Study Habit Inventery	14.65	192.46	t = 8.02 0.01 = 2.59 सार्थक है
		200	नियंत्रीत		24.04	177.86	
2	विद्यार्थीनी	100	प्रायोगीक	Study Habit Inventery	13.96	196.30	t = 3.84 0.01 = 2.60 सार्थक है
		100	नियंत्रीत		18.76	187.73	
3	विद्यार्थी	100	प्रायोगीक		14.35	188.62	t = 7.24 0.01 = 2.60 सार्थक है
		100	नियंत्रीत		24.71	167.99	

तालिका क्र. 2

समस्या समाधान अभियोग्यता का तुलनात्मक अध्ययन

अ.क्र.	विवरण	विद्यार्थी / विद्यार्थीनी	गट	चर	प्रमाण विचलन	मध्यमान	भौतिक अनुपात
1	विद्यार्थी	200	प्रायोगीक	Problem Solving Inventery	2.54	14.82	t = 13.57 0.01 = 2.59 सार्थक है
		200	नियंत्रीत		2.66	12.21	
2	विद्यार्थीनी	100	प्रायोगीक	Problem Solving Inventery	1.89	10.541	t = 9.19 0.01 = 2.60 सार्थक है
		100	नियंत्रीत		2.2	12.33	
3	विद्यार्थी	100	प्रायोगीक		2.56	14.90	t = 5 0.01 = 2.60 सार्थक है
		100	नियंत्रीत		3.07	12.09	

परिकल्पनाओं का सत्यापन

परिकल्पनाओं का सत्यापन प्रदत्तों के सांख्यिकीय विश्लेषण के आधार पर किया गया है।

परिकल्पना 1

कक्षा 9 वी स्तर के छात्र और छात्राओ को समाज विज्ञान विषय अध्यापन हेतू समूह गतिशीलता पद्धति का अध्ययन आदतो पर कुछ भी सार्थक प्रभाव नही होगा.

छात्र और छात्राओ पर समाज विज्ञान विषय अध्यापन हेतू समूह गतीशीतला पद्धति का अध्ययन आदते पर सार्थक प्रभाव पडता है। तालिका – 1 से प्रदर्शित होता है कि कक्षा 9 वी स्तर के छात्र और छात्राओ को समाज विज्ञान विषय अध्यापन हेतु समूह गतिशीलता पद्धती का अध्ययन आदतो में सार्थक अंतर दिखाई देता है। क्योंकि सांख्यिकीय दृष्टि से क्रांतिक अनुपात मान 0.01 = 2.59 स्तर के निर्धारित मान से प्राप्त मान 8.02 प्राप्त हुआ है। पूर्ण रूप से परिकल्पना का त्याग किया जाता है।

परिकल्पना 2

कक्षा 9 वी स्तर के छात्र और छात्रो को समाज विज्ञान विषय अध्यापन हेतु समूह गतिशीलता पद्धति का अध्ययन आदतो पर कुछ भी सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

छात्र और छात्रो (प्रायोगिक और नियंत्रीत गट) को समाज विज्ञान विषय अध्यापन हेतू समूह गतिशीलता पद्धति का अध्ययन आदतो पर सार्थक प्रभाव पडता है। तालिका – 1 से प्रदर्शित होता है कि कक्षा 9 वी स्तर के छात्र और छात्रो को समाज विज्ञान विषय अध्यापन हेतु समूह गतिशीलता पद्धति का उनके अध्ययन आदतो पर सार्थक प्रभाव पडता है। सार्थक अंतर दिखाई देता है क्योंकि सांख्यिकीय दृष्टि से क्रांतिक अनुपात मान 0.01 = 2.60, स्तर के निर्धारित मान से प्राप्त मान 3.84 प्राप्त हुआ है। पूर्ण रूप से परिकल्पना का त्याग किया जाता है।

परिकल्पना 3

कक्षा 9 वी स्तर के छात्रा और छात्राओ को समाज विज्ञान विषय अध्यापन हेतू समूह गतिशीलता पद्धति का अध्ययन आदतो पर कुछ भी सार्थक प्रभाव नही होगा।

छात्रा और छात्राओ पर तालिका – 1 से यह प्रदर्शित होता है कि कक्षा 9 वी स्तर के छात्रा और छात्राओ पर समाज विज्ञान अध्यापन हेतु समूह गतिशीलता पद्धति का उनके अध्ययन आदतो पर सार्थक प्रभाव पडता है। उनके अध्ययन आदते प्राप्तांक में सार्थक अंतर दिखाई देता है। क्योंकि सांख्यिकीय दृष्टि से क्रांतिक अनुपात मान 0.01 = 2.60 स्तर के निर्धारित मान से प्राप्त मान 7. 24 प्राप्त हुआ है। पूर्ण रूप से परिकल्पना का त्याग किया जाता है।

परिकल्पना 4

कक्षा 9 वी स्तर के छात्र और छात्राओ को समाज विज्ञान विषय अध्यापन हेतु समूह गतिशीलता

पद्धति का समस्या समाधान अभियोग्यता पर कुछ भी सार्थक प्रभाव नही होगा।

कक्षा 9 वी स्तर के छात्र और छात्राओ को समाज विज्ञान विषय अध्यापन हेतु समूह गतिशीलता पद्धति का समस्या समाधान अभियोग्यता पर सार्थक प्रभाव पडता है। तालिका – 2 से यह प्रदर्शित होता है कि सार्थक अंतर दिखाई देता है। क्योंकि सांख्यिकीय दृष्टि से क्रांतिक अनुपात मान 0.01 = 2.59, स्तर के निर्धारित मान से प्राप्त मान 13.75 जो टेबल मान से अधिक है। इस लिए परिकल्पना का पूर्णरूप से त्याग किया जाता है।

परिकल्पना 5

कक्षा 9 वी स्तर के छात्र और छात्रो को समाज विज्ञान विषय अध्यापन हेतु समूह गतिशीलता पद्धती का समस्या समाधान अभियोग्यता के उपर कुछ भी सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

तालिका – 2 से यह प्रदर्शित होता है कि कक्षा 9 वी स्तर के छात्र और छात्रो को समाज विज्ञान विषय अध्यापन हेतु समूह गतिशीलता पद्धति का समस्या समाधान अभियोग्यता पर सार्थक प्रभाव पडता है। उसके सार्थक अंतर दिखाई देता है। क्योंकि सांख्यिकीय दृष्टि से से क्रांतीक अनुपात मान 0.01 = 2.60 स्तर के निर्धारित मान से प्राप्त 9.19 प्राप्त हुआ है। जो टेबल मान से अधिक है। इसलिए परिकल्पना का पूर्णरूप से त्याग किया जाता है।

परिकल्पना 6

कक्षा 9 वी स्तर के छात्रा और छात्राओ का समाज विज्ञान विषय अध्यापन हेतु समूह गतिशीलता पद्धति का समस्या समाधान अभियोग्यता के उपर कुछ भी सार्थक प्रभाव नही होगा।

कक्षा 9 वी स्तर के छात्रा और छात्राओ को समाज विज्ञान विषय अध्यापन हेतु गतिशीलता पद्धति का समस्या समाधान अभियोग्यता के उपर सार्थक प्रभाव पडता है। उनके समस्या समाधान अभियोग्यता प्राप्तांक में सार्थक अंतर दिखाई देता है। क्योंकि सांख्यिकीय दृष्टि से क्रांतीक अनुपात मान df = 0.01 = 8.02 स्तर के निर्धारित मान से प्राप्त मान 5 प्राप्त हुआ है। जो टेबल मान से अधिक है। इसलिए परिकल्पना का पूर्णरूप से त्याग किया जाता हैं

शोध निष्कर्ष

इस शोधकार्य समूह गतिशीलता का माध्यमिक स्तर के छात्रो पर प्रभाव – एक प्रयोगात्मक अध्ययन के अंतर्गत परिणामो की व्याख्या एंव विश्लेषण के फलस्वरूप निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए।

1. कक्षा 9 वी स्तर के छात्र ओर छात्राओ को समाज विज्ञान विषय अध्यापन हेतु समूह गतिशीलता पद्धति का अध्ययन आदतो पे कुछ भी सार्थक प्रभाव नही होगा। 9 वी स्तर के छात्र और छात्राओ को समाज विज्ञान विषय अध्यापन हेतु समूह गतिशीलता पद्धति का अध्ययन आदतो पे सार्थक प्रभाव पडता है। छात्र और छात्राओ में अध्ययन आदतो प्राप्तांक में सार्थक अंतर प्राप्त हुआ है। क्योंकि सांख्यिकीय दृष्टि से क्रांतिक अनुपात (तालिका – 1) का मान क्रमशः 0.05 = 1.97, 0.01 = 2.59, df = 398 पे प्राप्त मान 3.78 अधिक है।
2. कक्षा 9 वी स्तर के छात्र और छात्रो को समाज विज्ञान विषय अध्यापन हेतू समूह गतिशीलता पद्धति का अध्ययन आदतो पे कुछ भी सार्थक प्रभाव नही होगा। 9 वी स्तर के छात्र और छात्रो को समाज विज्ञान विषय अध्यापन हेतु समूह गतिशीलता पद्धति का अध्ययन आदतो पे सार्थक प्रभाव पडता है। छात्र और छात्रो में अध्ययन आदतो के प्राप्तांक में सार्थक अंतर प्राप्त हुआ है। क्योंकि सांख्यिकीय दृष्टि से क्रांतिक अनुपात (तालिका – 1) मान, 0.05 = 1.97, 0.01 = 2.60, df = 198 से प्राप्त मान 3.84 यह अधिक है।
3. कक्षा 9 वी स्तर के छात्र और छात्राओ को समाज विज्ञान विषय अध्यापन हेतु समूह गतिशीलता पद्धति का अध्ययन आदतो पर कुछ भी सार्थक प्रभाव नही होगा।
4. कक्षा 9 वी स्तर के छात्र और छात्राओ को समाज विज्ञान विषय अध्यापन हेतु समूह गतिशीलता पद्धति का उनके अध्ययन आदतो पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।
5. कक्षा 9 वी स्तर के छात्र और छात्राओ के अध्ययन आदतो के प्राप्तांक मे सार्थक अंतर प्राप्त हुआ है। क्योंकि सांख्यिकीय दृष्टि से क्रांतिक अनुपात (तालिका–1) से 0.05 = 1.97, 0.01 = 2.60, df = 198 से प्राप्त मान 7.24 यह अधिक है।
6. कक्षा 9 वी स्तर के छात्रा और छात्राओ को समाज विज्ञान विषय अध्यापन हेतू समूह गतिशीलता पद्धति का समस्या समाधान अभियोग्यता पर कुछ भी सार्थक प्रभाव नही होगा।
7. कक्षा 9 वी स्तर के छात्रा और छात्राओ को समाज विज्ञान विषय अध्यापन हेतु समूह गतिशीलता पद्धति का समस्या समाधान अभियोग्यता प्राप्तांक में सार्थक प्रभाव पडता है। समस्या समाधान अभियोग्यता प्राप्तांक में सार्थक अंतर प्राप्त हुआ है। क्योंकि सांख्यिकीय दृष्टि से टेबल मूल्य (मान) 398 df स्वाधीनता मात्रा पे 0.05 = 1.97 और 0.01 = 2.59 है और प्राप्त मान 13.57 है तो, जो टेबल मूल्य (मान) से ज्यादा है। इस परिकल्पना अस्वीकृत है।
8. कक्षा 9 वी स्तर के छात्र और छात्राओं को समाज विज्ञान विषय अध्यापन हेतु समूह गतीशिलता पद्धति का समस्या समाधान अभियोग्यता के उपर कुछ भी सार्थक प्रभाव नही होगा। कक्षा 9 वी स्तर के छात्र और छात्राओं को समाज विज्ञान विषय अध्यापन हेतु

समूह गतिशीलता पद्धति का समस्या समाधान अभियोग्यता प्राप्तांक में सार्थक प्रभाव पडता है। समस्या समाधान अभियोग्यता प्राप्तांक मे सार्थक अंतर प्राप्त हुआ है क्योंकि सांख्यिकीय दृष्टि से टेबल मूल्य (मान) 198 df स्वाधीनता मात्रा पे 0.05 = 1. 97, 0.01 = 2.60 है और प्राप्त मान 9.19 है, जो टेबल मान से अधिक है। इस परिकल्पना अस्वीकृत है।

9. कक्षा 9 वी स्तर के छात्र और छात्रों को समाज विज्ञान विषय अध्यापन हेतु समूह गतीशिलता पद्धति का समस्या समाधान अभियोग्यता के उपर कुछ भी सार्थक प्रभाव नही होगा। कक्षा 9 वी स्तर के छात्र और छात्रों को समाज विज्ञान विषय अध्यापन हेतु समूह गतिशीलता पद्धति का समस्या समाधान अभियोग्यता प्राप्तांक के उपर सार्थक प्रभाव पडता है। समस्या समाधान अभियोग्यता प्राप्तांक मे सार्थक अंतर प्राप्त हुआ है क्योंकि सांख्यिकीय दृष्टि से टेबल मूल्य (मान) 198 df (स्वाधीनता) मात्रा पे 0.05 = 1. 97, 0.01 = 2.60 है और प्राप्त मान 5 है, जो टेबल मूल्य से अधिक है। इसलिए परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

शैक्षिक महत्व

विद्यार्थियो की शैक्षिक गुणवत्ता को बढाने के लिए अनेक क्षेत्रो में शोध कार्य किए जाते है। इनमें शोधकर्ता द्वारा किया गया शोधकार्य अत्यंत महत्वपूर्ण माना जा सकता है। शोधक ने अपने शोध कार्य में समूह गतिशिलता का माध्यमिक स्तर के छात्रो पर प्रभाव – एक प्रायोगिक अध्ययन करने को प्रयास किया है। समूह गतिशीलता एक ऐसी पद्धति है जो विद्यार्थीयो के मानसिक कारको को प्रभावीत कर सकती है। इस शोध मे यह पाया गया की माध्यमिक स्तर के विद्यार्थीयो के समस्या समाधान अभियोग्यता और उनकी अध्ययन आदतो के उपर सकारात्मकता से प्रभाव करती है।

इस शोध से यह पता चला कि समूह गतिशीलता पद्धति का माध्यमिक स्तर के विद्यार्थीयो पर उनके अध्ययन आदते, समस्या समाधान अभियोग्यता पर सार्थक प्रभाव पडा है। शोध द्वारा यह सिद्ध होता है कि समूह गतिशीलता पद्धति से पढाने पर विद्यार्थी और विद्यार्थीनीयो की शैक्षीक उपलब्धी, पर अच्छा प्रभाव होता है। इतना ही नही जिन बच्चो को इस पद्धती द्वारा पढायेंगे. उनकी समस्या समाधान अभियोग्यता भी बाकी बच्चो से अच्छी होती है। बाकी बच्चो से समस्या समाधान अभियोग्यता औसत से अच्छी होती है। उनकी अध्ययन आदतो के बारे में देखे तो जो बच्चो को समूह गतिशिलता पद्धति द्वारा पढाया उनकी आदते. बाकी बच्चो से बहोत अच्छी होती है। समूह गतीशिलता का लिंग से भिन्नता रखते हुऐ भी विद्यार्थी और विद्यार्थीयो दोनो पर खास प्रभाव होता है। परिणाम स्वरूप शैक्षिक उपलब्धी उच्च प्राप्त होती है।

इस शोध कार्य के परिणामों का उपयोग कर हम ग्रामीण एवं पिछडे (अध्ययन अधिगम) बच्चो को अध्ययन–अधिगम स्तर सुधारणे हेतु उपयोग में ला सकते है।

एक शिक्षक के रूपयें एंव एक प्रशासक के रूप में अपने अध्यापन शिक्षा दायित्वो को पूरा और नये तरीके से उपयोग करने के लिए इसका उपयोग कर सकते है। इतना ही नही अध्यापन वातावरण को भौतिक, सामाजिक, बौद्धिक, सांस्कृतिक आदि रूपो को विकास करने के लिए इसके द्वारा विद्यार्थीयो को पढाया जा सकता है। परिणाम स्वरूप छात्र एंव छात्राए समान रूप से अधिगम परिणाम दे सकेंगे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *Abrams D., Rutland A., Cameron L., (Dec. 2003) 'The development of subjective group dynamics ; children's judgement of Normative and Deviant in group and out group individual's Department of psychology, Uni of Knet, UK.(www.kar.kent.ac.uk)*
2. *Collen L., Theresa K., (2008) 'Understanding the influence of organizational culture and group dynamics on organizational change and learning' unitersity of Calgary, Calgary, Canada.(www.Emeraldinsight.com/09696471.htm*
3. *Dorwin c., Alvin zander (winter 2000) 'Orgiin of group dynamics group facilition; A research and Applications Journal N.2.' (www.iaf.world.org.)*
4. *D. Galajda (june 2012) Teacher's action Zone in facilitating group dynamics Lingvarvm Arena. Vol-3 – uni of Silesia, Poland. (www.ler.letras.up.pt)*
5. *Greenlee B.J., Karanxha 2.(sep 2010)' A study of group dynamics in educational leadership conort and Non-cohort Groups.' University of Florida.*
6. *Jaimini nirupama (Feb.2014) group dynamics in collaborative learning: contextual issues and consideration edu depertment uni of Delhi (www.impactionuranals.US.)*
7. *Jessica K.W.(may 2013) 'Satisfaction and success in Assigned group dynamics' Texas state uni-San marcos. (www.digital.library.txstate.edu)*
8. *Kurt lewin (1943)' frontier's in group dynamics' Bulletetin of the national research Council (www.humsagepub.com)*
9. *Lew H., Mc Avoy, Denies S.M., L.Allison stringer (1992)' group Development and group dynamics in out door education' (ERIC) University of Minnesota.(www.eric.org.)*
10. *Michael sweet, L.K. Michalsen (2007) 'How group dynamics research can inform the theory and practice of psot secondary small group learning' original article, central m.uni.USA*
11. *Ramayah T., Jantan M., moohal. No., Hooi ling K.,(2003) 'Internal group dynamics, team characteristics and team effectiveness' Beach Resoot, penag, Uni of sains, Malaysia. (wwwmeps.com)*
12. *Sarah Malaya sniezek (May 2007) 'How roups work : A study of group Dynamics and its possible Negative implication's serendip studio,*

(www.serendip.biynmowr.deu/exchange/node 481)

13. *Tate K. (2011) 'Developmentof the conceptualization of group dynamics inventory (CGDI)Uni-of florida. (www.ecampus. Nmit.al.h2)'*
14. *Winderknecht K. (2003) 'Just tell me what to do: group dynamics in a virtual environment' Rockhampton. Australia./www eprint.Qut.edu.qu.*
15. *Yasuyo matusumoto (July 2010) the impact of group dynamics on the L2 speech of student hurses in the classroom' procedia – social and Behavioral sciences, Kiryu university midori Japan. (www.sciencedirect.com)*

Books References

1. *Kothari C.H. (2004) 'Research methodology: method & Techniques' New age Inernational Publication, New Delhi.*
2. *Donelson R. Forsyth (2010 fifth edition)'Group dynamics' cengare tearning Academic Resouree center, U.S.A. (www.Team 7-k 15t2.Google code.com.)*
3. *Best, J.W. (1979), 'Research in Education' New Delhi, prentice Hall of India Pvt. Ltd.*
4. *Garret, H.E. (1989), 'Statistice in Psychology and Education' Bombay, Simons Pvt. Ltd.*
5. *Kothari, C.R. (1992), 'Research Methodology' New Delhi, Wiley Eastern Ltd.*

हिंदी पुस्तक संदर्भ

1. *भंडारी, डी. आर (1996), 'अनुसंधान पध्दती की विवेचना' जोधपूर, राजस्थानी ग्रंथाकार.*
2. *रावत, सी. एवं खंडेवाल, आर (1976), 'षोध : प्रविधी और प्रकिया' मथुरा जवाहर पुस्तकालय.*
3. *श्रीवास्तव, विजया एवं आस्थाना, निधी (2008), 'षैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी' आगरा, अग्रवाल पब्लिकेषन्स.*
4. *सिंह, रामपाल (2008), 'षैक्षिक मूल्यांकन' आगरा, अग्रवाल पब्लिकेषन्स.*